RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 74, अंक : 28 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 8 अक्तूबर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–74, अंक : 28, 5-8 अक्तूबर 2017 तदनुसार 23 अश्विन सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000

सर्वजीवनाधार हृदय से हृदय को प्राप्त होता है

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

अजो न क्षां दाधार पृथिवीं तस्तम्भ द्यां मन्त्रेभिः सत्यैः।
प्रिया पदानि पश्वो नि पाहि विश्वायुरग्ने गुहा गुहं गाः।।

-ऋ० १।६७।३

शब्दार्थ-अजः + न = अज की भाँति **क्षाम्** = पृथिवी को **पृथिवीम्** = विशाल अन्तरिक्ष को **दाधार** = धारण करता है तथा **द्याम्** = द्यौ को **सत्यैः** = सत्य **मन्त्रेभिः** = मन्त्रों, विचारों के द्वारा **तस्तम्भ** = थाम रखता है। हे प्रभो ! **पश्वः** = इस जीव के **प्रिया** = प्रिय **पदानि** = ठिकानों की, प्राप्त करने योग्य पदार्थों की **निपाहि** = सर्वथा रक्षा कर। हे **अग्ने** = सबके आगे रहने वाले भगवान् ! तू **विश्वायुः** = सबका जीवन होता हुआ **गुहा** = हृदय-गुहा से **गुहम्** = हृदय-गुहा को **गाः** = प्राप्त होता है अथवा **गुहा+गुहं+गाः** = गुप्त-से-गुप्त हो रहा है।

व्याख्या-भगवत्प्राप्ति के प्रयत्न के निमित्त प्रेरणा करने के लिए भगवान् के सामर्थ्य का वर्णन मन्त्र के पूर्वार्ध में किया गया है-**'अजो न क्षां दाधार पृथिवीम्'** = अजन्मा परमेश्वर इस पृथिवी और अन्तरक्षि को धारण करता है और-**'तस्तम्भ द्यां मन्त्रेभिः सत्यैः'** = सूर्यों, नक्षत्रों, ग्रहों-उपग्रहों आदि ज्योतिपिण्डों के आधारभूत द्यौ को भी वह अपने अबाध्य निर्देशों के द्वारा धार रखता है। इस महान् भगवान् को प्राप्त करके मनुष्य भी महान् बन जाता है। इस महान् भगवान् से प्रार्थना है कि-**'प्रिया पदानि पश्वो निपाहि'** = प्रभो ! जीवात्मा के अभीष्ट पदों की रक्षा करो। जो इतने विशाल संसार को धारण कर रहा है, उसके लिए आत्मा के अभीष्ट पदार्थों की रक्षा करना साधारण बात है, अतः उससे अपने अभीष्ट की रक्षा के लिए प्रार्थना करना अत्यन्त उपयुक्त है।

जीव के पद= ठिकाने-शरीर, इन्द्रिय, अन्तःकरण आदि हैं। इनकी रक्षा के लिए प्रार्थना का विशेष प्रयोजन है। इन्द्रियों की अद्भुत रचना से भगवान् का अनुमान द्वारा ज्ञान होता है, अन्तः करण में उसका साक्षात्कार होता है। शरीर इन इन्द्रियों तथा अन्तःकरण का आश्रय है। ये यदि नष्ट-भ्रष्ट हो जाएँ या विकल हो जाएँ तो भगवान् के ज्ञान का कोई साधन शेष नहीं रहता, मन के अविकसित होने के कारण पशु आदि भगवान् के ज्ञान और ध्यान के अयोग्य हैं। भगवान् के ज्ञान-ध्यान का साधन मानवदेह है, अतः इसकी रक्षा के लिए प्रार्थना है। भगवान् के ध्यान के लिए बहुत सामग्री की आवश्यकता नहीं। वह हृदय में रहता है, जिस महापुरुष ने अपने हृदय में इसका साक्षात्कार किया है, वह अपने हृदय से दूसरे के हृदय में उसका प्रकाश दिखा सकता है, अतः वेद कहता है-**'विश्वायुरग्ने गुहं गाः'** = सबका जीवनाधार ज्ञानस्वरूप परमात्मा हृदय से हृदय को प्राप्त होता है, अर्थात् किसी महात्मा के दिल से अपना दिल मिलाओ, वह तुम्हें तुम्हारे हृदय में छिपे प्रियतम की झाँकी दिखला देगा।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वैदिक भारत-कौशल भारत
आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत-कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

-प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिवम्।
वर्धमानं स्वे दमे।। **-ऋ० १.१.८**

भावार्थ-परमात्मा प्रकाशस्वरूप, यज्ञादि उत्तम कर्मों के करने वाले, धर्मात्मा ज्ञानी पुरुषों की, तथा पृथ्वी आदि लोक लोकान्तरों की रक्षा करने वाले हैं, और अपने दिव्य धाम जो सब दुःखों से रहित है उसी में वर्त्तमान हैं। ऐसे सर्वज्ञ सर्वान्तर्यामी परमात्मा की ही बड़े प्रेम से हम सबको भक्ति प्रार्थना व उपासना करनी चाहिये।

स नः पितेव सूनवे अग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये।। **-ऋ० १.१.९**

भावार्थ-जैसे पुत्र के लिए पिता हितकारी होता है और सदा यही चाहता है कि, मेरा पुत्र धर्मात्मा चिरजीवी, धनी, प्रतापी, यशस्वी, सुखी और बड़ा ज्ञानी हो। वैसे ही आप परम पिता परमात्मा चाहते हैं कि हम भी जो आपके पुत्र हैं धर्मात्मा चिरंजीव, धनी, प्रतापी और महाविद्वान् होकर लोक परलोक में सदा सुखी होवें।

हमारी सेनायें शत्रु विजयी हों

-ले. डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

आज विश्व का प्रत्येक देश अपनी सेनाओं की विजय की कामना करता है। विश्व विजेता होने का गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करना प्रत्येक की लालसा है। किन्तु यह सब कैसे संभव है? इस स्वप्न को साकार करने के लिए प्रत्येक सैनिक का शूरवीर होना आवश्यक है। आज का युग तो है ही विशेषज्ञ का। जिस के पास युद्ध कला की विशेष योग्यता होगी, वह ही विजयी हो सकता है। विश्व तो क्या एक छोटे से क्षेत्र को विजयी बनाने के लिए भी योग्यता की आवश्यकता है। अथर्ववेद राजनीति का वेद है। हम किस प्रकार की नीति अपनावें, किस प्रकार का अभ्यास करें कि हमें अन्यों पर विजय मिल सके। इस का अथर्ववेद में विस्तार से विचार किया गया है। विश्व विजय का स्वप्न देखने वाले के लिए अथर्ववेद का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। आज की राजनीति ही विजय व पराजय का मार्ग बतलाती है। इस मार्ग को जानने के लिए इसे अवश्य पढ़ें। योद्धा विजय प्राप्त करें, यह कामना अथर्ववेद के मन्त्र १९.१३.२ में इस प्रकार की गयी है :

आशु : शिशानो वृषभो न भीमो,
घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
स्क्रन्दनोअनिमिष एकवीर :,
शतं सेना अजयत साकामिन्प्रः।।

अथर्ववेद १९.१३.२।।

शब्दार्थ-(आशुः) तीव्रगति (शिशानः) तीक्ष्ण शस्त्रधारी, तेज बुद्धि (वृषभ : न) सांड की भान्ति (घनाघनः) भयंकर शत्रुओं का नाशक (चर्श्निनाम) शत्रुओं को (क्षोभनः) भयभीत करने वाला (स्नक्रन्दनः) शत्रुओं को युद्ध के निमित ललकारने वाला (अनिमिषः) अत्यंत सावधान दृष्टि (एकवीरः) अद्वितीय वीर (इंद्र) इंद्र ने (शतं सेना) शत्रु की असीमित या सैंकड़ों सेनाओं को (साकाम) एक बार में ही (अजयत) जीतता है।

भावार्थः तेज गति से तीक्ष्ण अस्त्रों को धारण कर शत्रु का विनाश व शत्रु पर भयानक बनकर युद्ध में ललकारने वाले अत्यंत सावधान अद्वितीय वीर इंद्र ने शत्रुओं की सैंकड़ों सेनाओं को एक साथ ही जीत लिया।

इस मन्त्र में एक महान् योद्धा का बड़े ही सुन्दर ढंग से चित्रण किया गया है। योद्धा को किस प्रकार से कार्य करना चाहिए, किस प्रकार के साधनों का युद्धक्षेत्र में प्रयोग करे तथा किस प्रकार से सफलता का वरण करे, इस सब की चर्चा इस मन्त्र का विषय है। इस निमित देवसेना के नायक इंद्र के शौर्य व वीरता का उल्लेख करते हुए कहा है कि इंद्र ने शत्रुओं की सैंकड़ों सेनाओं पर एक साथ विजय प्राप्त की।

इंद्र ने शत्रुओं की सैंकड़ों सेनाओं को एक साथ जीत लिया। इंद्र की इस सफलता का रहस्य क्या है?, जिसे हम भी अपना कर विश्व विजय के स्वप्न को साकार कर सकें? मन्त्र विजय के इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार देता है कि सफलता के तीन साधन इंद्र, आत्मबल, निर्भीकता तथा साधन सम्पन्नता थी। यह तीन ऐसे तत्व है, जो किसी भी सफलता के लिए आवश्यक होते हैं। बिना आत्मबल के विजय तो क्या किसी के ऊपर आक्रमण करने की सोचा भी नहीं जा सकता। एक व्यक्ति के पास आत्मबल तो है किन्तु न तो वह निर्भय है तथा न ही उसके पास साधन ही हैं कि वह किसी पर आक्रमण कर सके, ऐसा व्यक्ति भी युद्ध मैं विजय श्री को नहीं पा सकता। अतः किसी भी प्रकार के युद्ध में सफलता के लिए इन तीनों तत्वों का स्वामी होना आवश्यक है। यह तीन तत्व ही विजय का मुख्य आधार हैं। इन के अतिरिक्त योद्धा में कुछ अन्य गुणों का होना भी आवश्यक है। यह गुण है :

(१) तीव्रगति हो : युद्ध क्षेत्र में सदा तीव्रता से ही विजय प्राप्त की जा सकती है। जिसकी स्वयं की गति तीव्र है, जिस के घोड़े उत्तम कोटि के तेज गति वाले है, जिसके वाहन तेज चलते हैं, जिसके पास उच्चकोटि की प्रौद्योगिकी से युक्त विमान आदि हैं जो शत्रु को संभालने से पूर्व ही उसे दबोच ले, ऐसा योद्धा ही युद्ध क्षेत्र में सफलता पा सकता है।

(२) उत्तम शस्त्रों से संपन्न हो : योद्धा के पास केवल गति तीव्र होने से कुछ नहीं होने वाला। तीव्र गति से यदि आप ने शत्रु में घुस कर उसे चुनौती दे दी किन्तु आप शस्त्र विहीन हैं या उत्तम शस्त्रों से रहित है, शत्रु के मुकाबले अच्छे शस्त्र नहीं हैं तो विजयी नहीं होंगे अपितु शत्रु दल से घिर जाने से मारे जाओगे। आज वही विजेता होता है, जिसके पास न केवल तीव्र गति वाले साधन हों साथ ही उसके पास अत्याधुनिक व शत्रु से कहीं उत्तम शस्त्र हों।

(३) युद्ध विद्या में निपुण हो: गति तीव्र है, शस्त्र भी उत्तम हैं किन्तु युद्ध कला में निपुण नहीं हैं तो भी विजय संभव नहीं क्योंकि जो उत्तम शस्त्र हम लेकर तीव्र गति से शत्रु सेना में घुसेंगे, शस्त्र चलाने की कला में प्रवीण न होने के कारण हम शत्रु सेना पर प्रहार करने से पहले ही पकड़ लिए जावेंगे या मार दिए जावेंगे। अतः शत्रु पर विजय प्राप्त करने की अभिलाषा तब ही पूर्ण होगी जब हम उत्तम शस्त्र प्रयोग करने की विद्या को भी अच्छे से जानते होंगे।

(४) निर्भीक हों : सैनिक में निर्भीकता का गुण होना भी अति आवश्यक है। वह चाहे कितना ही तीव्रगामी हो, कितने ही उत्तम शस्त्रों से सुसज्जित हो तथा कितना ही उत्तम ढंग से शस्त्रों का परिचालन कर सकता हो, किन्तु तब तक वह विजयी नहीं हो सकता, जब तक वह निर्भय होकर रणभूमि में नहीं खड़ा होता। यदि यह सब उत्तम सामग्री व इसके प्रयोग में प्रवीण होकर युद्ध क्षेत्र में पहुंच तो गया किन्तु युद्धभूमि में भयभीत सा हो कांपते-कांपते शत्रु से मुंह छुपाने का प्रयास कर रहा हो तो वह शत्रु का सामना नहीं कर पाता तथा या तो युद्ध भूमि से भाग खड़ा होता है या पकड़ा जाता है। ऐसा व्यक्ति कभी योद्धा होने के लायक नहीं तथा निश्चित ही पराजित होता है। अतः विजय के अभिलाषी योद्धा के लिये तीव्रगामी, उत्तम शस्त्रों से सुसज्जित तथा युद्ध कला में प्रवीण होने के साथ ही साथ निर्भीक होना भी आवश्यक है। एक निर्भीक योद्धा युद्ध कला में कुछ कम प्रवीण होते हुए भी अपनी सेनाओं को विजय दिलवा सकता है। अतः विजयी होने के लिए योद्धा के पास निर्भीकता का होना अति आवश्यक है।

(५) असाधारण शक्ति रखता हो-युद्ध तो खेल ही शक्ति का है। विजय उसको ही मिलती है जो असाधारण शक्ति का स्वामी हो। असाधारण शक्ति के लिए तीव्र गति से आक्रमण करने की क्षमता, उत्तम शस्त्रों का स्वामी व उनका परिचालन करने की जानकारी, निर्भीकता व आत्म-विश्वास से युक्त असाधारण शक्ति का स्वामी होने से शत्रु की सेनायें उस वीर का मुकाबला नहीं कर सकेंगी। शत्रु सेनायें या तो भयभीत हो कर भाग जावेंगी, या मारी जावेंगी या फिर आत्म समर्पण कर देंगी। यह आत्मविश्वास की कमी का ही परिणाम था कि १९७१ के भारत पाक युद्ध में हमारे से अच्छे शस्त्र व अच्छे सहयोगी होते हुए भी पाकिस्तान की एक लाख से अधिक सेना ने हमारी सेनाओं के सामने आत्म समर्पण कर दिया था। इससे स्पष्ट है कि युद्ध क्षेत्र में योद्धा के पास असाधारण शक्ति का भी होना आवश्यक है।

(६) एकाग्रचित हो : ऊपर वर्णित सब गुणों के अतिरिक्त एक उत्तम योद्धा, जो विजय की कामना रखता है, युद्ध काल में उसका एकाग्रचित होना भी आवश्यक है। जो युद्ध भूमि में शत्रु पर गोला फैंकते समय अपने परिजनों की समस्याओं में उलझा है अथवा किसी सुंदर दृश्य का सपना ले रहा है या किसी अन्य विपत्ति को स्मरण कर रहा है तो उसका ध्यान शत्रु की स्थिति पर न होने से उसका वार तो खाली जावेगा ही अपितु शत्रु का कोई गोला उसकी जान ही ले लेगा। जिस प्रकार अर्जुन को केवल चिड़िया की आँख ही दिखाई देती थी, ठीक उस प्रकार योद्धा को युद्ध भूमि में शत्रु का मर्म स्थल ही दिखाई देना चाहिए, तभी वह उसे समाप्त कर विजेता बन सकेगा। अतः विजय के अभिलाषी योद्धा के पास एकाग्र-चित्तता का गुण होना भी आवश्यक है।

(७) अपने कार्य को सर्वतो-भावेन की भावना से करने वाला हो : योद्धा केवल व्यक्तिगत सुख या अहं की पूर्ति के लिए युद्ध न करे। ऐसे योद्धा के साथ कभी भी जनता नहीं होती। जनता के विरोध के कारण उसे विजय की प्राप्ति संभव नहीं हो पाती। यदि वह सर्व जन के सुख को सम्मुख रख रणभूमि में खड़ा है तो जन सहयोग सदा उसके साथ होगा। जनसहयोग साथ होने से उसकी शक्ति बढ़ जावेगी तथा विजय दौड़ते हुए उसके पास आवेगी। इस भावना का युद्ध भूमि में महत्वपूर्ण स्थान है।

इस सब चर्चा को समझने के लिए इंद्र का अभिप्रायः भी समझना आवश्यक है इंद्र कहते हैं विशेषज्ञ को। जो अपने विषय में पूरी प्रकार से पारंगत हो दूसरे शब्दों में जो अपने विषय का पी एच. डी अथवा डी लिट हो, सर्वोच्च ज्ञान पा लिया हो, वह ही अपने विषय का इंद्र होता है। जो योद्धा युद्ध सम्बन्धि सब विद्याओं में प्रवीण होता है, उसे रणभूमि का इंद्र कहा जा सकता है। ऐसा योद्धा एक साथ अनेक सेनाओं का सामना करने और उन्हें पराजित करने की क्षमता रखता है। जब हमारे

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

स्वच्छता अभियान के तीन वर्ष पूर्ण

स्वच्छता हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। स्वच्छता के बिना मनुष्य अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हो जाता है। इसीलिए जहां स्वच्छता है वहीं पवित्रता का वास है। संसार के सभी प्राणियों में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। मनुष्य का यह दायित्व है कि वह अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ एवं सुरक्षित रखें। अगर वातावरण स्वच्छ होगा तो मनुष्य का जीवन भी स्वस्थ और नीरोग होगा, उसके मन एवं विचारों पर स्वच्छ वातावरण का सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इसके विपरीत गंदगी में जीने वाले लोगों का जीवन नरक के समान हो जाता है। गंदगी का मनुष्य के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उसके मन एवं विचारों पर भी प्रतिकूल प्रभाव होता है। गंदगी में जीने वाले लोग अनेक प्रकार की आधि-व्याधियों से ग्रसित हो जाते हैं। इसीलिए संसार का सबसे बुद्धिमान प्राणी होने के नाते मनुष्य को अपने आसपास के वातावरण का ध्यान रखना चाहिए। उसके घर के आसपास व स्वयं उसके द्वारा कोई ऐसा कार्य न किया जाए जिससे वातावरण पर प्रभाव पड़े।

2 अक्तूबर 2014 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की जयंती पर हमारे देश के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया गए स्वच्छता अभियान को इस वर्ष 2 अक्तूबर को तीन वर्ष पूरे हो गए हैं। इन तीन वर्षों के अन्तराल में स्वच्छता के अभियान को जितना महत्त्व देना चाहिए था उतना नहीं दिया गया। जितने उत्साह और उमंग के साथ इस अभियान को शुरू किया गया था उतनी ही जल्दी इस अभियान से किनारा किया गया है। जब इस अभियान को शुरू किया गया था तो बड़े-बड़े नेताओं से लेकर अभिनेताओं तक के हाथ में झाड़ू दिखाई देता था और सड़कों, गलियों और चौराहों पर सफाई करते थे। जहां तक प्रधानमन्त्री जी के इस अभियान का सवाल है तो उसका उत्तर यह है कि हमारे प्रधानमन्त्री जी के द्वारा शुरू किया गया यह अभियान बहुत उत्तम था। उन्होंने ऐसी परिस्थितियों में इस अभियान को आरम्भ किया था जिस समय हमारी पहचान गंदगी के ढ़ेर तले दबकर रह गई थी। किसी का ध्यान इस ओर नहीं था। जब हम पश्चिमी देशों की साफ सफाई से स्वयं की तुलना करते हैं तो बेहद ग्लानि होती है। हर सुबह पूरे देश में रेल की पटरियों के दोनों ओर के दृश्य किसी भी विदेशी के सामने सिर झुकाने के लिए काफी हैं। इन परिस्थितियों में प्रधानमन्त्री जी का यह सराहनीय कदम है। परन्तु स्वच्छता केवल हमारे लिए अभियान नहीं, दिखावा नहीं बल्कि हमारा स्वभाव होना चाहिए। इस स्वच्छता को हमने केवल एक अभियान के रूप में नहीं देखना है जो कुछ समय के पश्चात खत्म हो जाए। इस स्वच्छता को हमने अपने जीवन का स्वभाव बनाना है। यह अभियान किसी को दिखाने के लिए नहीं, फोटो खिंचाने के लिए नहीं, राजनीति से प्रेरित नहीं अपितु राष्ट्रहित को सामने रखकर होना चाहिए।

इस स्वच्छता के मिशन को पूरा करने के लिए हमें स्कूलों में बच्चों को जागरूक करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाने चाहिए। माता-पिता और अध्यापकों सभी का कर्त्तव्य बनता है कि वे बच्चों को सफाई के प्रति जागरूक करें। बच्चों को कूडेदान का इस्तेमाल करना सिखाएं। उनकी छोटी-छोटी आदतों को सुधारने का प्रयास करें। स्कूल में, अपने घर में, रास्ते में किसी प्रकार की कोई गंदगी न करना बच्चों का स्वभाव होना चाहिए। स्कूल में बच्चों की प्रत्येक गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए। बच्चों को बताना होगा कि टॉफी खाकर उसका कागज इधर-उधर फैंकने के बजाय कूड़ेदान में डालना चाहिए, मूंगफली खाकर उसके छिलके को इकट्ठा करके कूड़ेदान में डाले तथा केले का छिलका भी कूडेदान में डाले क्योंकि इससे जहां गंदगी फैलती है वहीं अगर किसी के पांव के नीचे आ जाए तो गिर भी सकते हैं। ये बच्चों के प्रतिदिन के कार्य हैं। अगर बच्चे इन कार्यों में स्वच्छता को अपना लें तो हमारा स्वच्छता का लक्ष्य पूरा हो सकता है। बच्चों को बचपन से ही इन कार्यों की आदत होनी चाहिए। आज यह आवश्यक है कि सार्वजनिक सफाई बच्चों के पाठयक्रम का व्यवहारिक हिस्सा बनें। अन्य विषयों के साथ-साथ बच्चों को सफाई के लिए जागरूक करते रहें।

स्वच्छ भारत अभियान के लिए हमें भौतिक गंदगी की सफाई के साथ-साथ आम लोगों की मानसिकता को भी बदलना होगा। प्रधानमन्त्री ने स्वच्छ भारत को बनाने का जो लक्ष्य रखा था वह कठिन अवश्य था लेकिन असम्भव नहीं। स्वच्छता अभियान एक ऐसा अभियान है जिसमें किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। स्वच्छता राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक है। दुनिया के दूसरे देशों को देखकर हमें ग्लानि होती है कि काश हमारा देश भी ऐसा ही साफ सुथरा होता। इस स्वच्छता अभियान को अपनाने से भारत को इतने लाभ होंगे कि इनकी गिनती करना मुश्किल होगा। इस समय भारत के आर्थिक विकास के लिए जो बात सबसे अधिक जरूरी है वह यह है कि विदेशी निवेश को आकर्षित किया जाए। लेकिन इसके लिए स्वच्छता जरूरी है। प्रधानमन्त्री ने 2 अक्तूबर 2014 को कहा था कि यदि भारत स्वच्छ होता है तो डब्ल्यूएचओ के अनुसार प्रति व्यक्ति वर्ष में साढे छह हजार रूपये की बचत कर सकेगा क्योंकि स्वच्छता के कारण बीमारियों पर होने वाला खर्च कम हो जाएगा। सभी को वित्तीय रूप से इसका कुछ न कुछ लाभ अवश्य होगा। भारत का गौरवपूर्ण इतिहास है और इसकी संस्कृति काफी पुरानी है। इसे देखने समझने के लिए बड़ी तादाद में विदेशी पर्यटक भारत आना चाहते हैं, लेकिन गंदगी की वजह से यहां आने से कतराते हैं। सिंगापुर थाईलैंड जैसे देशों की अर्थव्यवस्था उनके पर्यटन की वजह से चल रही है, लेकिन हमारे यहां पर्यटक दिन प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं।

हमारा मानना है कि स्वच्छता सिर्फ एक अभियान नहीं, बल्कि हमारे जीवन का स्वभाव होना चाहिए। जब तक हम इसको अपना स्वभाव नहीं बनाएंगे तब तक हम स्वच्छ भारत की कल्पना नहीं कर सकते। यह उचित नहीं कि हम सफाई के विषय पर घंटों भाषण देते रहें और मुंह में गुटका, पान तम्बाकू चबाते रहे और पीक थूकते रहें और सरकार को कोसते रहें। अपने घर में सफाई रखें लेकिन घर का कूडा नाली में, पड़ोसियों के दरवाजे अथवा गली में फैंककर हम सभ्य नहीं हो सकते। पुण्य से अधिक यश की कामना के लिए भंड़ारे करने वालों को भी सफाई का ध्यान रखना चाहिए। सफाई के प्रदर्शन से हजार गुणा श्रेष्ठ है गंदगी न करने का स्वभाव बनाना। सरकारी और गैर सरकारी प्रयासों के द्वारा लोगों में यह भावना जरूर पैदा की जानी चाहिए और जागरूकता लाई जानी चाहिए कि सफाई बेहद महत्वपूर्ण काम है। अभी तक लोगों की अवधारणा यही है कि सफाई न करना सम्मान का प्रतीक है। लेकिन विचार का यह पहिया अब उल्टा घूमना चाहिए। कोई कितना ही बड़ा व्यक्ति क्यों न हो अगर वह किसी तरह की गंदगी करता है तो वह सभ्य कहलाने का अधिकारी नहीं है। हमें सबसे पहले अपने स्वयं से, अपने परिवार से, अपने मोहल्ले से, अपने गांव से और अपने कार्यस्थल से इसे आरम्भ करना होगा। ऐसे अभियान मात्र शुरूआत हैं, अन्तिम लक्ष्य नहीं। यदि हम इस अभियान को अपना, अपने बच्चों तथा पूरे परिवार का स्वभाव , आदत बना लें तभी स्वच्छ भारत के लक्ष्य तक पहुंचा जा सकता है। यह अभियान एक दिन के लिए नहीं, एक महीने के लिए नहीं, एक वर्ष के लिए नहीं बल्कि यह तो निरन्तर चलने वाला अभियान है।

स्वच्छता अभियान के इन तीन वर्षों में इसका प्रभाव अवश्य हुआ है, लोगों में सफाई के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है। खुले में शौच करना कम हुआ है और लोगों ने शौचालय निर्माण के कार्य में रूचि दिखाई है। परन्तु अभी भी बहुत कुछ करना बाकि है और यह केवल सरकार या प्रधानमन्त्री का कार्य नहीं है। यह राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह स्वयं जागरूक बने और लोगों को जागरूक बनाएं। सरकार सिर्फ योजना बना सकती है, प्रेरणा दे सकती है, सहयोग कर सकती है परन्तु उसे क्रियान्वित करना हमारे हाथ में है। इसीलिए अपने मन से इस विचार को त्याग दें कि प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी का स्वच्छता अभियान का मिशन फेल हो गया है या प्रधानमन्त्री असफल हो गए हैं। अगर प्रधानमन्त्री का यह स्वच्छता अभियान का मिशन फेल होता है तो कहीं न कहीं हम सभी दोषी हैं। इसमें प्रधानमन्त्री का दोष नहीं हमारा दोष है क्योंकि हमें गंदगी में जीने की आदत पड़ गई है। प्रधानमन्त्री का कार्य पूरे देश में झाड़ू लेकर सफाई करने का नहीं है। इसीलिए सफलता-असफलता का आकलन करने के स्थान पर हम सभी स्वच्छता को अपने जीवन का आवश्यक अंग बनाएं तभी हमारा राष्ट्र स्वच्छ होगा और दुनिया के स्वच्छ देशों में हमारी गिनती होगी।

प्रेम भारद्वाज
सम्पादक एवं सभा महामन्त्री

वेदों में गणतन्त्रात्मक शासन

-ले० शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

स्वामी दयानन्द सरस्वती का कथन है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सब विद्याओं में राज्य व्यवस्था सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। राज्य में शान्ति और व्यवस्था बनाए रखने का कार्य राज्य व्यवस्था का ही तो है। चारों वेदों में राज्य व्यवस्था और शासन प्रबन्ध से संबंधित लगभग 1250 मंत्र है। वेद में राज्य व्यवस्था के उद्गम का सिद्धान्त राजा और प्रजा के मध्य हुआ सामाजिक समझौते का सिद्धान्त है। राजा और प्रजा के मध्य समझौते में राजा को प्रजा ने कुछ विशेष अधिकार दिये और राजा ने दुष्ट आततायी लोगों से प्रजा की रक्षा का उत्तरदायित्व लिया। वेद में इस विषय पर निम्नांकित वर्णन हुआ है।

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेररावणः।

पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठय।।

ऋ. 1.36.15

हे (बृहद्भानो) बड़े-बड़े विद्यादि ऐश्वर्य के तेज वाले (यविष्ठय) अत्यन्त तरूण अवस्था युक्त (अग्ने) तेजस्वी राजन्। आप (धूर्ते) कपटी, अधर्मी (अरावणः) दान-धर्म रहित कृपण (रक्षसः) महा हिंसक, दुष्ट मनुष्य से (नः) हमको (पाहि) बचाइये। (रिषतः) सबको दुःख देने वाले मनुष्य से हमें पृथक् रखिये (उत) और (वाः) भी (जिघांसत) मारने की इच्छा करने वाले शत्रु से हमारी (पाहि) रक्षा कीजिए। खेती बाड़ी, धन, धान्यादि सब पदार्थों की रक्षा पूर्वक (उत्पत्ति) और न्याय पूर्वक विभाजन राज्य के द्वारा ही संभव है।

सुष्वाणास इन्द्रस्तुमसि त्वा सनिष्यन्तश्चित्तु विनृम्णवाजं।

आ नो भर सुवितं यस्य कोनातनात्मना सहयाम त्वोताः।।

सा. पूर्वार्चिक अ. 3 नवति दशति मं. 4.

अर्थ-हे राजन् ! सोमादिकों को उत्पन्न करते हुए और धान्यादि का न्याय पूर्वक विभाग करते हुए आपकी हम स्तुति करते हैं। हे बहुधन अथवा बहुत बल आपसे रक्षित हम जिस धनादि की कामना करें उस प्राप्त करने योग्य धन आदि को हमारे लिए प्राप्त कराइये। हम आपकी कृपा से नाना प्रकार के धनों को प्राप्त करें।

राज्य की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई इसके विषय में इसी प्रकार विस्तृत वर्णन वेदों में हुआ है।

योनिष्ट इन्द्र सदने अकारित-मानृभिः पुरन्हूतः प्रयाहि।

असो यथानाऽविता वृधश्चिद्ददो वसूनि ममदश्च सोमैः।।

साम. पूर्वा. उनवीं दशति मंत्र 2

अर्थ-(इन्द्र) हे राजन् (सदने) आपको विराजने के लिए (ते) आपका (योनि) राज सिंहासन (अकारि) हमने बनाया है। (पुरूहूतः) हे बहुतो द्वारा पुकारे गए (तम्) उस सिंहासन पर (नृभिः) मंत्रियों सहित (आ प्र याहि) आकर विराजिए। (यथा) जिससे (नः) हमारे (अविता) रक्षक (चित्) और (वृधः) वर्जक (असः) हूजिए। (वसूनि) विद्या और रत्नादि धन (दरः) हमें दीजिए। (च) और (सोम) सोमादि ओषधियों के रसों से (ममद) हृष्ट-पुष्ट होइए।

इस मंत्र से स्पष्ट विदित होता है कि राज्य का निर्माण प्रजा ने स्वयं ही किया है। प्रजा ने ही बहुमत से राजा को चुना है। राजा को प्रजा की रक्षा करना है और राजा द्वारा नियत किए नियमों का पालन करना है।

यह एक समझौतावादि सिद्धांत है जिसके अनुसार प्रजा में व्यवस्था स्थापित करने के लिए प्रजा द्वारा बहुमत से एक शक्तिशाली व्यक्ति को राजा के रूप में चुन कर उसे कुछ निश्चित अधिकार दिए जाते हैं जिसके बदले में वह व्यक्ति प्रजा के रक्षण का भार ग्रहण करता है। व्यवस्था के लिए प्रजा को राजा को कर देना आवश्यक है।

प्रजा महे महे वृधे भरध्वं प्रचेत ते प्रसुमति कृणुध्वं।

विशः पूर्वी प्रचर चर्षणि प्राः।।

साम. पूर्वा. अ. 3 दशमी दशति मं. 6

हे मनुष्यों। तुम्हारे बड़े रक्षक सत्कार योग्य बुद्धिमान राजा के लिए तुम कर भरो और अनुकूलता स्थापित करो। मनुष्यों के पालक राजा तुम प्रजाओं को अपने अनुकूल रखो।

राजा को उसकी सेवा के एवज में राज्य की सम्पूर्ण भूमि खानों आदि का स्वामी स्वीकार किया गया है।

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणी नामधिक्षमा विश्वरूपं यदस्य।

ततोददाति दाशुरे वसूनि चोद द्राध उपस्तु तं चिदर्वाक्।

सा. पू. अ 6 प्रथम दशतिः मं. 2

प्रजापालक राजा जंगम पशु आदि और प्रजा का स्वामी है। राज्य में जो कुछ है वह सब राजा का है। राजा उसी में से प्रजा को धन देता है। राजा का चयन सम्पूर्ण प्रजा ने मिलकर किया है। इस पर कहा है-

त्वमग्ने वृणते ब्राह्मणा इमेशिवो अग्ने संवरणे भवानः।

सपत्नहाग्ने अभिमाति जिद्भव स्वे गृहे जागृह्यामयुच्छन्।।

अर्थ-हे तेजस्वी राजन्। हमारे चुनाव में मंगलकारी हो। हे तेजस्वी राजन्। शत्रुओं को विनष्ट करने वाला और अपने सन्तान पर, धन अथवा घर वा अधिकार में चूक न करता हुआ जागता रहे।

पथ्या रेवति बहुधा विरूपाः सर्वा सुगत्य वरायस्ते अक्रन्।

तास्त्वा सर्वा संविदाना ह्वयन्तु दशमी मुग्रः सुमना वशेह।

मार्ग पर (पैदल) चलने वाली, धनवाली, विविध आकार एवं स्वभाव वाली सब प्रजाओं ने एक मत होकर, मिलकर तेरे लिए यह श्रेष्ठ पद प्रदान किया है। वे सब प्रजाएं तुझकों पुकारें। तेजस्वीं और प्रसन्न चित्त तू इस राज्य में दसवीं अवस्था को वश में कर। वेद में अकेले राजा को सर्वोच्च शक्ति प्राप्त नहीं है। राजा को तीन सभाओं के द्वारा दी गई सलाह के अनुसार कार्य करना होता है।

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परिविश्वानि भूषथः सदासि।

अपश्यमत्र मनसा जगन्वान्व्रते गंधर्वा अपि वायु केशाना।।

ऋ. 3.38.6

वेद में कहा गया है कि राजा और प्रजा के पुरूष मिलकर सुख प्राप्ति और विज्ञान वृद्धि कारक राजा-प्रजा के सम्बन्ध रूप व्यवहार में तीन सभा अर्थात् विद्यार्य सभा, धर्मार्य सभा, राजार्य सभा नियत करके बहुत प्रकार के समग्र प्रजा सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म, सुशिक्षा आदि धनादि से अलंकृत करे। स्वामी दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं-

तं सभा च समितिश्च सेना च। अथर्व. 15.2.9.2

सभा सभाव मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः।।

अथर्व. कां. 19 अनु 7 व 55 मं. 6

उन राज धर्म को तीनों सभा, समिति और सेना मिलकर पालन करे। सभासद और राजा को योग्य है कि राजा सब सभासदों को आज्ञा देवे कि सभा के योग्य मुख्य सभासद तू मेरी सभा की धर्म व्यवस्था का पालन कर और जो सभा के योग्य सभासद हैं वे भी सभा की व्यवस्था का पालन किया करें। इसका आश्य यह है कि एक को स्वतंत्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए किन्तु राजा जो सभापति तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राज्य सभा के अधीन रहे जो ऐसा न करोगे तो राष्ट्रमेव विशा हन्ति तस्माद्राष्ट्री विश घातुकः।

विशमेव राष्ट्र याद्यां करोति तस्माद्राष्ट्री विशमति च पुष्टं पशुं मन्यत इति।

शत. का. 13 अनु. 2 ब्रा. 3

जो प्रजा से स्वतंत्र स्वाधीन राजवर्ग रहे तो राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करें। इसलिए अकेला राजा स्वाधीन वा उन्मत्त होकर प्रजा का नाशक होता है अर्थात् वह प्रजा को खाये जाता है इसलिए किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिए। जैसे सिंह या मांसाहारी हष्ट-पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं वैसे स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है।

वेद में राष्ट्र की भावना का भी यजुर्वेद अध्याय 10 में विशद वर्णन हुआ है। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 125 की ऋचाओं में सभा के अधिकारों का अच्छा वर्णन हुआ है। पाठकों के लिए मैं यहाँ पर दो ऋचाएं प्रस्तुत करता हूँ।

अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथम यज्ञियानाम्।

तां मा देवा व्यदधुः पुरूत्रा भूरिस्थात्रां भूयां वेशयन्तीम।।

ऋ. 10.125.3

(शेष पृष्ठ 7 पर)

महर्षि दयानन्द और प्रकाश

-ले० डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री

विश्व के सभी मनुष्यों को ही नहीं अपितु प्राणी मात्र को प्रकाश प्यारा है। उलूक और महाअन्धकार में रहने वाले कुछ क्षुद्र कृमि कीट इसके अपवाद हो सकते हैं। जो प्राणी जितना अभ्युन्नत है, जिसका अन्तःकरण मन-बुद्धि आदि तत्व जितना ज्यादा स्पन्दनशील है उतना ही उनमें न केवल भौतिक प्रकाश अपितु मानसिक बौद्धिक और आत्मिक ज्योति प्राप्त करने की ललक है।

''**ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु**'' वाक्-प्राण-मनः बुद्धि और आत्म तत्व से संबलित मनुज समुदाय सभी जीवों में श्रेष्ठ हैं। निखिल मानव समुदाय की अन्तश्चेतना को सत्य-ज्ञान-धर्म और न्याय के प्रकाश से आलोकित करने में संसार के जिन उल्लेखनीय मनीषियों का योगदान है उनमें ऋषि दयानन्द का स्थान वरेण्य है। महर्षि अरविन्द के शब्दों में दयानन्द विलक्षण हैं निराले हैं पर्वत श्रेणियों में एक अलग श्रेणी एक अलग उत्तुंग चोटी के समान।

अद्यतन प्रचलित धर्म-मत-मजहब-सम्प्रदाय और मतान्तर; आस्तिक-नास्तिक; कर्म-भाग्य-पुरूषार्थ और दैव; हिन्दू-मुस्लिम-ईसाई-बौद्ध; जडाद्वैत-चेतनाद्वैत या द्वैत-अद्वैत के विभिन्न भेदोपभेद ज्ञान-कर्म-भक्ति के विविध मतवाद या अर्थ-काम और धर्म-शास्त्रियों की स्वशास्त्रीय दृष्टियों के स्थापित चौखटों में ऋषि दयानन्द का आकलन एकांगी होगा। दयानन्द ने अपने और पराये चाहे वह जाति, वर्ण, देश या मत-मतान्तरों में से किसी भी दृष्टि से हो, बिल्कुल परे रहकर पक्षपात रहित होकर न्याय की तुला पर सबको कसा है, परखा है और उनमें से ग्रहणीय-वरेण्य को स्वीकार किया है तथा त्याज्य, मानव मूल्य-विरोधी तत्वों की उपेक्षा ही नहीं की है, अपितु उसका सप्रमाण तर्क पुरसर खण्डन भी किया है। इस कार्य में उनका कोई लेशमात्र भी स्वार्थ या पक्षपात नहीं है। इसके लिए ऋषि ने व्यक्तिगत जीवन में स्वयं दारुण दुःख उठाये हैं और भयंकर विष वेदना को भी हंसते-हंसते सहन किया है तथा विश्व बन्धुत्व भाव से मानव ही नहीं प्राणिमात्र को अमृत प्रदान किया है।

ऋषि दयानन्द का यक्ष प्रश्नः ऋषि दयानन्द के दो जटिल यक्ष प्रश्न हैं, जिनमें से पहला प्रश्न नास्तिकों से है-(१) अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं होती यह वैज्ञानिक और तार्किक सिद्धान्त है। अतः अचेतन (जड़) से चेतन (प्राणी-सजीव-चेतनावान् जीव) कैसे उत्पन्न हो सकता है? (२) दूसरा प्रश्न आस्तिकों से हैं-यदि ब्रह्म = परमात्मा = God या खुदा हम जीवात्माओं का स्वामी, पूज्य और उपास्य है तो क्या यह अन्याय नहीं होगा कि गीता, कुरान या बाइबिल द्वारा मानवों को सत्य-धर्म और ज्ञान का प्रकाश उसने क्रमशः आज से पाँच हजार, दो हजार या डेढ़ हजार वर्ष पूर्व ही क्यों कराया जब कि इस धरती पर मानव समुदाय को अवतरित हुए करोड़ों और अरबों वर्ष हो चुके हैं? काल क्रमानुसार ईश्वरीय-ज्ञान में परिवर्तन या निस्तीकरण सभी कालों में एकरस-अखण्ड-अद्वैत ब्रह्मज्ञान में घटित नहीं हो सकता। इसी प्रकार धर्म के तत्व युगानुरूप परिवर्तित नहीं हो सकते। इसी दृष्टि से सृष्टि के आदि में ही वेदज्ञान के होने तथा जड़ और चेतन तत्व दोनों के अनादि-नित्य और अनन्त होने का सिद्धान्त पूरी तरह वैज्ञानिक और बुद्धि ग्राह्य सिद्ध हो जाता है। चेतन तत्व भी उपास्य-उपासक, अल्पज्ञ-सर्वज्ञ, शरीरी-अशरीरी भेद से जीवात्मा और परमात्मा दो रूपों में, इस प्रकार प्रकृति, जीव और ब्रह्म इन ३ तीन अनादि नित्य तत्वों का सिद्धान्त सत्य सिद्ध होता है जिसके प्रकाशक ऋषि दयानन्द हैं।

(वेद का धर्म) : वेद का धर्म वैदिक धर्म है ज्ञान का धर्म है, सत्य का धर्म है, न्याय और प्रकाश का धर्म है। वह हिन्दू धर्म पौराणिक धर्म, शैव-शाक्त-कास्ललिक या वैष्णव धर्म नहीं है वह मानव-धर्म है। वेद का ''आर्य'' शब्द जाति-वर्ण-(Race) नस्ल या देश का वाचक नहीं है, वह गुणवाचक है। स्वयं वेदों के ''विजानीहि आर्यान् ये च दस्यवः'' पद (शब्द) बताते हैं कि वेद का आर्य, दस्यु डाकू या लुटेरा=शोषक का विरोधी है। वेद की भाषा कभी किसी काल की जनभाषा नहीं रही। जनभाषा संस्कृत रही है। संस्कृत की तरह अन्य सभी भाषाओं में वेद के शब्द हैं, वैदिक भाषा के नियम बहुत ही विस्तृत हैं और इसके शब्द भी योगिक हैं। संस्कृत भाषा के नियमों में संकोच और शब्दों की प्रवृत्ति रूढ़ि होती गई है अन्य भाषाओं की तरह। आधुनिक भाषाशास्त्री भी यूरोपीय भाषा परिवार का मूल वैदिक भाषा को मानते हैं। अनेक भाषा विदों का यह सुझाव भी रहा है कि झण्डो-युरोपियन, इण्डो-जर्मनिक या इण्डो-हिट्टाइट के स्थान में इस भाषा-परिवार का नाम आर्य परिवार रखा जाए। प्रसिद्ध भाषा शास्त्री डॉ० उदयनारायण तिवारी का कहना था कि स्वामी जी का आर्य भाषा नाम रखना बहुत बड़े अर्थ गाम्भीर्य और दूरदृष्टि का सूचक था। वेद का परमेश्वरीय नाम ओ३म्, धार्मिक कृत्य यज्ञ, अभिवादन नमस्ते और श्रेष्ठ, सज्जन का नाम आर्य इन शब्दों में व्यापक दृष्टि, अर्थ विशदता, सर्वजन ग्राह्यता और असाम्प्रदायिकता है। इनकी तुलना अन्य किसी शब्द से नहीं की जा सकती।

यह अच्छी तरह सबको ज्ञात है कि वेदों का सम्बन्ध, द्रष्टत्व ऋषियों से है-मन्त्रद्रष्टारः। अतः वेदों का मर्म या अर्थ ऋषि-दृष्टि से ही उद्घाटित होता है। वैदिक ऋषि मधुच्छन्दा, वशिष्ठ, वामदेव, ऋषिकाएँ-अपाला, घोषा, रोमशा से लेकर परवर्ती ऋषि-ऐतरेय, याज्ञवल्क्य, गोपथ, मनु, यास्क, पाणिनि और पतञ्जलि तक सभी ऋषियों की वैदिक मान्यताएँ एक हैं उसमें कोई मत वैभिन्य नहीं है। वेदों के शब्द यौगिक हैं, उनमें लौकिक इतिहास नहीं है, वे सभी सत्य विद्याओं के मूल हैं, धर्म-अर्थ-काम त्रिवर्ग के साधक सभी शास्त्रों के वे उत्स हैं, स्त्रोत हैं। व्याकरण, शिक्षा कल्प, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, न्याय, सांख्य, योग, मीमांसा, वैशेषिक और वेदान्त, औपनिषदिक ब्रह्म विद्या, प्राणविद्या, यज्ञिय कर्मकाण्ड, आयुर्वेद, धनुर्वेद, अथर्ववेद तथा गान्धर्व वेद, दर्शनों तथा विविध विद्याओं-गणित राजनीति, सैन्य संचालन, कृषि, व्यापार, भूगर्भ, वनस्पति तथा जन्तुविज्ञान प्रभृति शाखाओं का विस्तार वैदिक ऋचाओं की प्रेरणा से हुआ है। उनमें विद्या, युक्ति, तर्क और विज्ञान के विरुद्ध कुछ भी नहीं है। ऋषियों की यही दृष्टि दयानन्द को भी मान्य है। दुःख है कि वेदार्थ की यह प्राचीन दृष्टि कालान्तर में तिरोहित हो गई। आचार्यों और पण्डितों के मध्यकालीन-भाष्य ऋषियों की दृष्टि से मेल नहीं खाते। अतः ऋषि दयानन्द उन्हें चुनौती देते हैं। यही कारण है कि ऋषि दयानन्द यास्क से सहमत हैं सायण और महीधर से नहीं। पाणिनि से सहमत हैं भट्टोजी दीक्षित से नहीं। मनु से सहमत हैं कुल्लुक भट्ट से नहीं। व्यास और जैमिनि से सहमत है, शंकराचार्य और शबर स्वामी से नहीं। क्योंकि मूल सूत्रकार ऋषियों के व्याख्याकार बहुधा मूलपथ से भटक कर सम्प्रदाय का प्रवर्तन कर देते हैं।

आर्ष और अनार्ष : ऋषि दयानन्द किसी प्राचार्य साधु, भक्त, पण्डित, मुल्ला, पादरी, पीर अवतार और पैगम्बर के अनुयायी नहीं हैं। इन सभी का मूल्यांकन वे हंस की भाँति परमहंस बनकर नीरक्षीर विवेक करते हैं। आर्ष दृष्टि और ऋषियों का मन्तव्य उन्हें प्रिय है। क्योंकि आर्ष काल मानवता का काल है। अनार्ष काल दानवता और साम्प्रदायिक कलह-परायणता का काल है। महाभारत काल से पूर्व हिन्दू-मुस्लिम-ईसाई आदि मत-मतान्तरों का साम्प्रदायिक विद्वेष नहीं था। ऋषि दयानन्द उसी दृष्टि के पोषक हैं। अतः पण्डितों और आचार्यों के, मुल्ला और पादरियों की साम्प्रदायिक दृष्टि उन्हें मान्य नहीं है। आर्ष ग्रंथों को परतः प्रमाण और साम्प्रदायिक ग्रंथों को अनार्ष मानकर त्याज्य कहने के पीछे उनकी यही जनकल्याण भावना थी।

वैदिक सिद्धान्त और दयानन्दः एकेश्वर के स्थान पर बहुदेवतावाद या अवतार वाद या पैगम्बरवाद, पातंजल योग दर्शन के अष्टांग मार्ग के स्थान पर धूप-दीप-नैवेद्य परक मूर्ति पूजा, स्वाध्याय, सत्संग, तप और यज्ञ के स्थान पर, गंगा स्नान, तीर्थ यात्रा, नाम कीर्तन से पाप नाशन, ज्ञान कर्म उपासना के समन्वित पथ के स्थान में केवल, कल्पित ज्ञानमार्गी, भक्तिमार्गी, सगुण-निर्गुण धारा रामाश्रयी कृष्णाश्रयी शाखा का अवलम्बन ऋषि दयानन्द श्रेयस्कर नहीं समझते। पंचयज्ञों और संस्कारों को उन्होंने प्रबल प्राणवत्ता और अर्थवत्ता प्रधान की है। पितृयज्ञ के स्थान पर मृतकश्राद्ध और तर्पण, गुणकर्मस्व-भावपरक वर्ण व्यवस्था के स्थान पर म्रियमाण जन्मतः अभिमानमूलक जाति व्यवस्था की इसके के समुचित कारण ऋषिवर ने दर्शाये

(शेष पृष्ठ 6 पर)

दयानन्द और वेद

-ले. डॉ. ब० द० धवन चण्डीगढ़

(गंताक से आगे)

3. सं ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु। (यजुर्वेद 32/8)

(स) वह परमात्मा (प्रजासु) सब प्राणियों में (ओतः प्रोतः च) कपड़े में ताने-बाने के समान (विभूः) सर्वत्र समाया हुआ है।

(ग) सभी मानव एक पिता परमात्मा के पुत्र हैं

1. समस्त जगत् में सब देशों के मानव एक ही परम सत्ता की सन्तति हैं और सब भाई-भाई हैं। इनमें से कोई बड़ा नहीं और न ही कोई छोटा है-

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुसौभगाय।

(ऋग्वेद 5.60.5)

अर्थात् (अ-ज्येष्ठासः) जिनमें कोई बड़ा नहीं है और (अ-कनिष्ठासः) जिनमें कोई छोटा नहीं है, ऐसे (एते) ये सब (भ्रातरः) भाई एक जैसे हैं। ये सब (सौभगाय) उत्तम ऐश्वर्य के लिए (सं वावृधुः) मिलकर उन्नति के लिए प्रयत्न करते हैं।

(2) बालक स्वभावतः अपने माता-पिता के पास बैठने में सुख मानता है। बालक पढ़ रहा है, भोजन कर रहा है, पर वह माँ को अपने पास से हिलने देना नहीं चाहता। माँ कहती है तू कहानी पढ़ रहा है, मैं यहां बैठी क्या करूंगी, कुछ और काम कर लेती हूं। पर बालक उसे पकड़कर बैठा लेता है, नहीं तुम यहीं बैठी रहो। बड़ा सुहावना दिन है, बादल छाये हुए हैं, कहीं घूमने जाने की योजना बनती है। पर जब बालक को पता चलता है कि पिता जी नहीं चल रहे हैं तो वह कहता है मैं तो पिता जी के बिना नहीं जाता। बात क्या है? माता-पिता का सान्निध्य बालक को क्या देता है? आखिर कुछ तो बालक को मिलता ही है, तभी तो वह उनके बिना व्याकुल होता है। इन्हीं भक्तों को भी भगवान् के सान्निध्य से कुछ मिलता है। भगवान् भक्तों की माता है, भक्तों का पिता है-

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नम् ईमहे।

(ऋग्वेद 8.38.11)

'हे शतक्रतो इन्द्र, हे सैंकड़ों कर्म करने वाले प्रभो, हे निवासक, तू ही हमारा पिता है, तू ही माता है। इसलिये हम तुझसे सुख की याचना करते हैं।'

5. वेद ज्ञान सब मानवों के लिये है।

महर्षि दयानन्द का पूर्ण विश्वास था कि वेदों का ईश्वरीय ज्ञान सब मानवों के लिए है। किसी विशेष देश या जाति के सदस्यों के लिए नहीं। सभी को उनको पढ़ने तथा तदनुसार अपने जीवन को ऊंचे नैतिक स्तर पर लाने का पूर्ण अधिकार है। इसके समर्थन में वे निम्न यजुर्वेद के मन्त्र को मूलाधार मानते थे-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय। (26/2)

अर्थात् भगवान्! मुझे ऐसा बनाइए कि मैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इत्यादि अर्थात् सारी जनता के लिए कल्याण करने वाले ज्ञान का प्रचार तथा प्रसार कर सकूं।

कैसी सुन्दर और उदात्त भावना है उपर्युक्त वेद मन्त्र की। किसी एक वर्ग के लिये नहीं किन्तु संपूर्ण समाज और जनता के प्रति। वैदिक संस्कृति की व्यापक दृष्टि का इससे अच्छा प्रमाण और क्या हो सकता है? चारों वेदों में शूद्र के प्रति अन्याय अथवा कठोर दृष्टि कहीं भी नहीं मिलेगी। समस्त देश को पुनः इस मूल तथ्य के प्रति जागरूक करने का श्रेय ऋषिवर दयानन्द को मूलतः जाता है।

उपसंहार

(क) दयानन्द ने गुरु-दक्षिणा में अपने गुरु ब्रह्मर्षि स्वामी विरजानन्द को यह प्रण दिया था कि वह जीवन पर्यन्त आर्ष ग्रन्थों का प्रचार और अनार्ष ग्रन्थों का खण्डन करेगा। दुर्भाग्यवश उनका क्रियात्मक कार्यकाल मुश्किल से 20 वर्ष (1863 से 1883 तक) ही रहा। पूर्ण विद्या प्राप्त करने के पश्चात् वे धार्मिक एवं सामाजिक सुधार के लिये अग्रसर हुए तो धर्म, धार्मिक गुरुओं, पुरोहितों एवं समाज में लोगों की बड़ी दुर्दशा थी। इसका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार किया जा सकता है-

(1) वेदों के मंत्रों का केवल यही प्रयोजन है कि उनका यज्ञों में प्रयोग किया जाए-वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः (याजुषज्योतिष)।

(2) मन्त्रों के शब्द मात्र में शक्ति है, यहां तक कि वास्तव में मन्त्र का कोई अर्थ ही नहीं होता-'अनर्थका हि मन्त्राः' (निरुक्त 1.15) (ख) देश की ऐसी अवस्था में महर्षि दयानन्द जो कार्य कर गये, उसको संक्षिप्त रूप में निम्नानुसार कह सकते हैं-

(1) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

(2) वेद का सम्बन्ध किसी विशेष राष्ट्र, काल और जाति से नहीं। वह तो देश और काल से अतीत समस्त संसार, सब कालों और जातियों के लिये है।

(3) वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब श्रेष्ठ जनों का परम धर्म है।

(4) सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए-अनृतात् सत्यमुपैमि (यजु० 1.5)

(5) सब के साथ प्रीति पूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य बर्तना चाहिये। (मानव धर्म)

(6) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये-'सर्वभूतहिते रताः'।

आर्य समाज तलवाडा का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज तलवाडा का वार्षिक उत्सव 20 अक्तूबर से 22 अक्तूबर तक बड़ी धूमधाम एवं उत्साह से मनाया जा रहा है। 20 एवं 21 अक्तूबर को प्रातः 8.00 बजे से 10 बजे तक हवन यज्ञ और वेद प्रवचन तथा सायं 8.00 बजे से 10 बजे तक भजन श्री अरुण कुमार वेदालंकार एवं प्रवचन श्री विजय शास्त्री जी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के होंगे। 22 अक्तूबर 2017 को प्रातः 8.00 बजे से 10.30 बजे तक महायज्ञ होगा। 11.30 बजे से 1.30 बजे तक प्रवचन होंगे। जिसमें विशेष आमंत्रित विद्वान स्वामी सदानन्द जी महाराज अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर, आचार्य आर्य नरेश जी सोलन होंगे। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस अवसर का लाभ उठावें।

पृष्ठ 5 का शेष-महर्षि दयानन्द और...

हैं। स्व देशभक्ति के समर्थक अन्यायकारी शोषक परराष्ट्रनीति के कट्टर विरोधी है। सादगी तपोमय जीवन, आदर्श गृहस्थ धर्म और चार आश्रमों की मर्यादा के स्वामी जी प्रबल पक्षपोषक हैं। जीवन में निष्कपटता, ईमानदारी, नर-नारी सम्भाव और अनाथ दीन दुःखियों क्षुद्र कृमि कीट पतंगों सभी वन्य जल-थल प्राणियों सहित गोवंशों पर जातीय, सामाजिक तथा राष्ट्रीय कृपाभाव के वे आकांक्षी हैं। सत्य अर्थ का प्रकाश करना स्वामी जी का ध्येय था और यह उनके जीवन का लक्ष्य भी। स्वामी जी सभी ऋषियों के प्रशंसक हैं और प्रतिनिधि प्रवक्ता भी उन्होंने कोई नवीन मत-मतान्तर की स्थापना नहीं की है।

उनका संदेश वेदों का संदेश है, ऋषियों का संदेश है, संसार के सभी मनीषियों के संदेशों का सार है। स्वामी जी ने कभी अपनी व्यक्तिगत प्रशंसा नहीं चाही और न इसके लिए उन्होंने कोई प्रयत्न ही किया। व्यक्ति पूजा एक प्रकार की मूर्ति पूजा है, स्वामी जीवाणु ग्राहकता के समर्थक हैं। यही कारण है कि आर्य समाज इतने वर्षों के बाद भी स्वामी जी की मूर्ति स्थापना कहीं नहीं करता और न करना चाहिए।

दयानन्द का यह प्रकाश विश्व का तमस् दूर करे। केवल भौतिक तमस् ही नहीं अन्तः तमस् भी। अन्धकार से प्रकाश की ओर असत्य से सत्य की ओर अज्ञान से ज्ञान की ओर, अधर्म से धर्म की ओर मृत्यु से अमृत की ओर हम चलें। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योति-र्गमय।। मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

अमृतसर में गुरुविरजानन्द निर्वाण दिवस

आर्य समाज नवांकोट, अमृतसर में दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द सरस्वती जी का निर्वाण दिवस बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० प्रकाश चन्द जी ने विधिपूर्वक हवन यज्ञ करवाया श्री राज कुमार योगाचार्य जी ने परिवार सहित यजमान बन कर यज्ञ की शोभा को बड़ाया। कुमारी शिवानी आर्य हरविन्द्र कुमार, राजन आर्य, कीमतीलाल, लक्षमण तिवारी शकुन्तला आर्य, निर्मल आर्य ने भजनों के माध्यम से गुरुवर के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित किये। पश्चात् पं० बनारसीदास आर्य ने दण्डी स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द जी महाराज का अपने गुरु विरजानन्द जी से मिलना किसी चमत्कार से कम नहीं था। गुरु विरजानन्द जी के मन में एक सुयोग्य शिष्य की खोज करने के लिये घर से निकलना तथा स्वामी दयानन्द जी के मन में एक सुयोग्य गुरु की खोज के लिये घर से निकलना, ईश्वर के अद्भुत चमत्कार का ही परिणाम था। जैसे कल-कल करती नदी समुद्र में मिल कर शांत हो जाती है उसी प्रकार गुरु शिष्य के मिलन से दोनों के मन शांत हो गये।

बाल किशन, विजय आनन्द जी, चमन लाल, हरजिन्द्र सिंह, सुदेश रानी, शकुन्तला देवी आर्य समाज पुतलीघर, आर्य समाज मेहरपुरा का बराबर सहयोग मिलता रहा। तत्पश्चात् मन्त्री जी ने सभी सज्जनों का धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के पश्चात् जल पान वितरण किया गया।

-पं. बरनासी दास आर्य

कोटा से आर्य प्रतिनिधि मण्डल रवाना

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमार 2017 के लिए कोटा से आर्य प्रतिनिधियों को आर्य समाज जिला सभा द्वारा सम्मानपूर्वक विदा किया गया। आर्य समाज के जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि म्यांमार में 6 अक्तूबर से 8 अक्तूबर 2017 तक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सम्मेलन में विश्व के अनेक देशों में स्थित विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधि भाग लेंगे। इस अवसर पर विश्व में महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को आमजन तक पहुंचाने के लिए विभिन्न सत्रों में चर्चा की जाएगी। वेद, वैदिक संस्कृति एवं आर्य समाज की विचारधारा के प्रचार-प्रसार के लिए कार्ययोजना तैयार होगी। सभी प्रतिनिधियों को म्यांमार रवाना होने से पूर्व पगड़ी और माल्यार्पण करके शुभकामनाएं दी गई। इस अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, आरसी आर्य, लालचन्द आर्य, राधाबल्लभ राठौर, वेदमित्र वैदिक आदि आर्यजन उपस्थित थे।

अर्जुनदेव चड्ढा प्रधान जिला आर्य सभा

पृष्ठ 2 का शेष-हमारी सेनायें शत्रु...

सैनिक युद्ध कला में इंद्र बन जावेंगे तो निश्चित ही हम सदा विजयी होंगे। मन्त्र में इसलिए ही कहा गया है कि इंद्र ने एक साथ अनेक सेनाओं को पराजित कर दिया।

मनुष्य का जीवन भी एक रणभूमि है, जिसमें प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को पाने के लिए अनेक युद्धों में उलझा रहता है। वह बड़ी सफलता के साथ रणभूमि में विजेता होकर संसार सागर को पार करना चाहता है, किन्तु माया में विजेता होकर संसार में विजेता होकर संसार, मोह, छल, कपट, अहंकार आदि उसे कुछ भी कर पाने में बाधक होते हैं। जो इन बाधाओं की ओर देखे बिना केवल अपने लक्ष्य पर ही अपनी दृष्टि गड़ाए रहता है, वह अपने विषय का इंद्र बन सफल होता है, शेष सब पराजित होते हैं। अत: इस संसार सागर के संग्राम में हम अपने विषय का इंद्र बन इसे विजय करने का प्रयास करें तो निश्चय ही सफलता मिलेगी।

शोक समाचार

बड़े दु:खी हृदय से सूचित किया जाता है कि आर्य समाज सुजानपुर के प्रधान श्री वेद प्रकाश उप्पल जी का दिनांक 29 सितम्बर 2017 को देहान्त हो गया। उनका अन्तिम संस्कार सुजानपुर शमशानघाट में पूर्ण वैदिक रीति से पं. मोहन लाल शास्त्री एवं गायत्री प्रसाद शास्त्री जी के द्वारा किया गया। अन्तिम संस्कार में शहर के गणमान्य लोग एवं दयानन्द मठ दीनानगर से स्वामी सदानन्द जी भी उपस्थित थे। श्री वेद प्रकाश उप्पल जी का जीवन त्याग एवं सेवा से भरपूर था एवं ईश्वर पर पूरा विश्वास था। आर्य समाज की सेवा में वे सदा तत्पर रहते थे तथा समय-समय पर आर्थिक सहायता भी करते थे। वह अपने पीछे दो पुत्र एवं उनका भरा पूरा परिवार छोड़ गए। श्री वेद प्रकाश उप्पल जी के चले जाने से जहां परिवार की क्षति हुई है वहीं आर्य समाज सुजानपुर को भी कभी न पूर्ण होने वाली क्षति हुई है। आर्य समाज सुजानपुर के सभी सदस्य ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि इस बिछड़ी आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें एवं परिवार को इस दु:ख को सहने की शक्ति प्रदान करें। स्व. श्री वेद प्रकाश उप्पल जी की आत्मिक शान्ति के लिए अन्तिम शोक सभा का आयोजन 06 अक्तूबर 2017 को रोशन फार्म, सुजानपुर में दोपहर 1 से 2 बजे सम्पन्न होगी।

मन्त्री एवं सभी सदस्यगण आर्य समाज सुजानपुर

पृष्ठ 4 का शेष-वेदों में गणतन्त्रात्मक...

मैं राष्ट्र सभा पूरे राष्ट्र की स्वामिनी हूँ। धनों की सम्यक् प्राप्ति कराने वाली हूँ अर्थात् राष्ट्र का आय-व्यय निर्धारित करती हूँ। उत्तम कार्यों और व्यवहारों की मुख्य सोच विचार और निर्णय करने वाली मैं हूँ। सभी कर्मचारियों के अधिकार और कर्त्तव्य मैं निर्धारित करती हूँ। ये शक्तियां सभा को प्रजा से प्राप्त हुई है। कुछ ऋचाओं में तो राष्ट्र सभा की शक्ति का ऐसा वर्णन हुआ है कि जैसे वह कोई तानाशाह शासक हो।

अहं मुवे पितरस्व भूर्वन्मभवी निरप्रूवन्त: समुद्र।

ततो वितिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं वर्ष्यणोप स्पृशामि।।

ऋ. 10.125.7

अर्थ-मैं राष्ट्र सभा इस राष्ट्र की शिखर पर पालन राजा को उत्पन्न करती हूँ। वास्तव में राष्ट्र सभा में सर्वाधिक मत प्राप्त व्यक्ति को ही संसद द्वारा प्रधान शासक चुना जाता है मेरा स्थान आकाश में और समुद्र में भी है। इसी कारण से समरूल भुवनों में स्थिर रहती हूँ। इस आकाश की श्रेष्ठता को छूती हूँ।

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्तिय: प्राणिति य ई श्रृणोत्युक्तम्

अमन्तवो मात उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।।

ऋ. 10. 125.4

अर्थ-(य: विपश्यति) जो विशेष रूप से उसे देखता है अर्थात् विशिष्ट ज्ञानी है, (य: प्राणिति) जो प्राण युक्त (इम् उक्तम् श्रृणोति) इस वचन को सुनता है (स:) वह (मया) मेरे द्वारा (अन्नम् अत्ति) अन्न खा रहा है। (माम् अमन्तव:) मुझे न मानने वाले (न उप क्षियन्ति) मेरे समीप नहीं होते दूर ही रहते हैं। (हे श्रुत) हे विद्वान् (श्रुधि) सुन (ते) तेरे लिए (श्रद्धिवं) श्रद्धा योग्य वचन (वदामि) कहती हूँ।

वेद में राष्ट्र की भावना की अभि व्यक्ति यजुर्वेद अध्याय 10 के प्रथम चार मंत्रों में हुई है, वहां बार-बार राष्ट्र दा राष्ट्रं मे देहि आप राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव कर रहे हैं कृपया मुझे राष्ट्र पति पद के लिए चुनें। वेदों में राज्य शक्ति का विकेन्द्रीयकरण हुआ है। सम्पूर्ण सत्ता पर एक व्यक्ति का अधिकार नहीं है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में इसका अच्छा विस्तृत वर्णन किया हुआ है। पाठक उसे भी देखें।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

आर्य समाज नंगल टाऊनशिप में विजयदशमी पर्व मनाया

शनिवार दिनांक 30.9.2017 को आर्य समाज नंगल टाउनशिप में विजयदशमी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। आर्य समाज में प्रातकालीन 8.30 बजे हवन यज्ञ शुरू हुआ जिसमें श्री सत्यपाल जौली जी कोषाध्यक्ष आर्य समाज मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे। शुक्रताल (मुजफ्फर नगर) से पधारे। स्वामी आनन्दवेश जी ने आशीर्वाद दिया और श्री राम चन्द्र जी के जीवन चरित्र पर, बुराई पर अच्छाई की जीत, असत्य पर सत्य की जीत एवं रावण दहन, पर प्रकाश डाला। महामंत्री श्री सतीश अरोडा जी ने बताया कि रावण एक महाबली योद्धा, महापंडित चारों वेदों का ज्ञाता होने के बावजूद भी अहंकार के कारण उसकी पराजय हुई। मनुष्य के जीवन में अहंकार त्याग कर, मर्यादा पुरुषोत्तम राम चन्द्र जी के बताये मार्ग पर चल कर मर्यादा में रह कर जीवन व्यतीत करना चाहिये तभी राम राज्य स्थापित हो सकता है। उन्होंने बताया कि महर्षि बाल्मीकि ने मुनिश्रेष्ठ नारद से जब पूछा कि भगवन इस समय इस संसार में गुणी, शूरवीर, धर्मयज्ञ, सत्यवादी और दृढ़ प्रतिज्ञ कौन है? सदाचारी, सब प्राणियों का हित करने वाला, प्रियदर्शन, धैर्ययुक्त तथा काम क्रोधादि शत्रुओं को जीतने वाला, कौन है? मुझे यह जानने की प्रबल अभिलाषा है, महर्षे आप इस प्रकार के श्रेष्ठ पुरुष के जानने में समर्थ है, अत: मुझे बताइये।

उन्होंने आगे बताया कि महर्षि बाल्मीकि के ऐसा पूछने पर मुनिश्रेष्ठ नारद ने कहा कि महर्षे आपने जिन गुणों का वर्णन किया है वे बहुत, श्रेष्ठ और दुर्लभ है तथा उन सब का एक ही व्यक्ति में मिलना कठिन है फिर भी आप द्वारा पूछे सभी गुणों से युक्त एक व्यक्ति है जो इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुये हैं और राम नाम जगद्विख्यात है। वे अति बलवान, धैर्ययुक्त, जितेन्द्रिय, बुद्धिमान, प्रियवक्ता, शत्रुओं के नाशक, धर्म के जानने वाले, सत्यवादी, प्राणियों के हित में तत्पर, वेदों के ज्ञात, धनुर्वेद में कुशल, आर्य, प्रियदर्शन, गम्भीरता में समुद्र के समान, धैर्य में हिमालय के सदृश, पराक्रम में विष्णु के तुल्य, क्रोध में कालाग्नि जैसे, क्षमा में पृथिवी सम दान करने में कुबेर और सत्य बोलने में दूसरे धर्म के समान है।

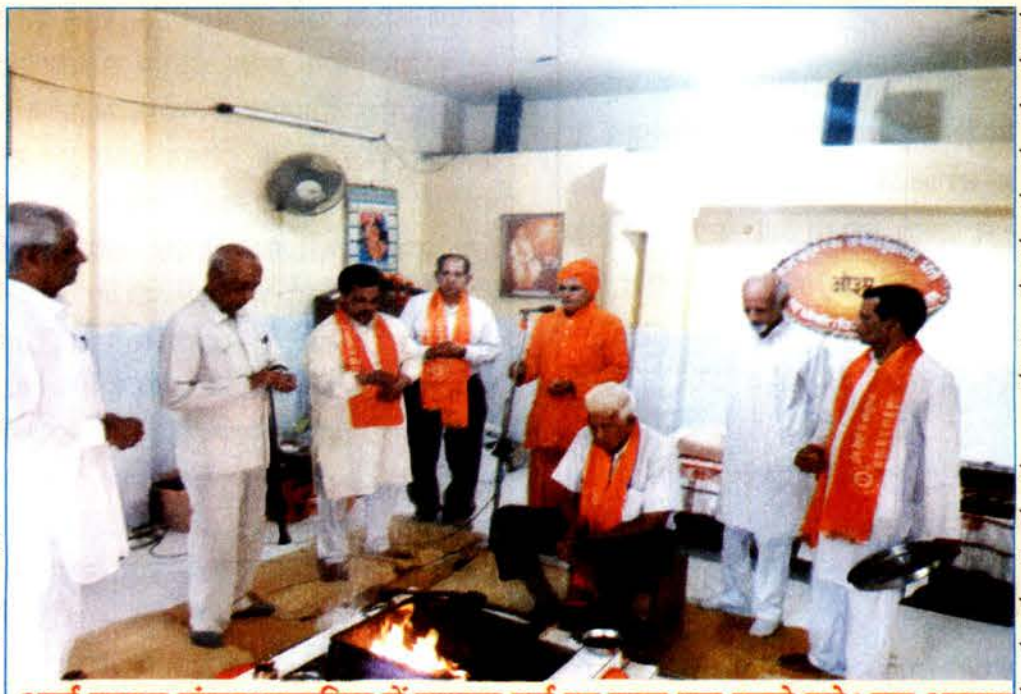

आर्य समाज नंगलटाऊनशिप में दशहरा पर्व पर हवन यज्ञ करते हुये। इस अवसर पर गुरुकुल शुक्रताल (मुजफ्फर नगर) से पधारे स्वामी आनन्दवेश जी ने अपना आशीर्वाद दिया।

श्रीमती सहगल जी ने भी मधुर भजन गाकर सब को मन्त्रमुग्ध कर दिया और उन्होंने भी विजयदशमी की महत्ता बारे प्रकाश डाला। इस अवसर पर सुरेन्द्र मदान जी प्रधान आर्य समाज, सतीश अरोडा मंत्री आर्य समाज, श्री.ए.डी.सरदाना संरक्षक, श्री ओ.पी. खन्ना जी संरक्षक, श्री जी.सी. तलूजा जी, श्री सतपाल जौली जी, श्री बुधवाल जी, श्रीमती आशा अरोडा, श्री सुरेन्द्र शास्त्री जी एवं सभी आर्य जनों की उपस्थिति में श्री कृष्ण कान्त शर्मा पुरोहित जी ने विशेष मंत्रों द्वारा हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया।

सतीश अरोड़ा
मंत्री आर्य समाज नंगल

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।